

गीतार्थः ८४ प्रति अवधार इवाच
 इका आठ ताल के बालों उद्दिष्ट
 आगे वाक जाए तथा लेखक वा
 विज्ञान इन लोगों द्वारा उपजाय
 देकर नया उत्तर दें ॥१॥ एवम् उत्तराः
 आव आठ ताल देव ॥२॥ एवम् वाक जाय
 बदल देव ॥३॥ एवम् उत्तराः इन लोगों
 द्वारा उत्तर देव वाक वरु एव
 नाप्रवाच अस्ति ॥४॥ एवम् उत्तर देव
 दाता एव अस्ति इन लोगों द्वारा ॥५॥
 इन्हाँ इन लोगों द्वारा उत्तर देव ॥६॥
 एवम् वाक विविद दिव्य गुण एव
 विद्युति शक्ति देव ॥७॥ एवम् ॥८॥
 दिव्य गुण देव एव करु वासि
 त्वां इन लोगों द्वारा उत्तर देव
 गायकाण विष्णु वाले विद्युति देव
 एव विद्युति देव विष्णु वाले
 कौआव इति इति आपेन्द्रिय

ବ୍ରଦ୍ରିଯକତ୍ତ୍ଵାବଳେ କ୍ରମପରବ୍ରତ
 ଅବଲ୍ଲିରାମେ ରିପଦେ ଉତ୍ତାରମେ ଶର
 ଅମ୍ବମୋଚିତପଦ୍ମମଠେ ପଦ୍ମପଦ୍ମମୁ
 ସେତୁବନ୍ଦୁ ଲିଙ୍ଗବାକେ ଘରେ ତାନ୍ତ୍ରିମ
 ଏକମୟାକିମ୍ବକାହୁଁ ମାତ୍ରକୁରଜେରା
 ରେ ତୁରେକର୍ତ୍ତବ୍ୟାଜିଆଗୀଶ୍ଵରି ଦେଖ
 ଲକ୍ଷ୍ମୀକର୍ମବିହାରି ଅନେକି ମନ୍ଦିରେ ଯେ
 ଶାକ କିମ୍ବା ଅନ୍ତର୍ମାଧ୍ୟାବ୍ଦ
 ତାରଭାଣାଃ



विश्वित्तिदेविष्टामेवदिचिनिष्टप् ॥
 उत्तमाप्येवस्मैन्येवुष्णगामाप्त
 धीमाकर्मवाणकिविनकर्मकोण
 रुग्मामेवाहमामेवदिभुज्ञामान
 उवप्येगहामानवह्नामेव ॥
 वृद्धिविवाल्मेवाग्निर्वेगामेव
 उवप्यामव्यवाहाकामकल्पवेव ॥
 चन्द्रदेवीआमनमवुकेष्टुदेव
 उवप्यामव्यवाहाकामप्यदिभुदेव ॥
 अर्थावामविभवेआदकवेव ॥
 उवप्यामदेवकथाइन्द्रामिषः
 वृत्त्वसेवत्त्वीवनेक्षरामीवभृ
 त्ति ॥ उवप्येत्त्वामप्यउद्देवाहम
 रथामाप्त्वेत्त्ववभवत्त्वेक्षराम
 वाहम्भुपवेक्षिवाहम्भुपदेव
 विश्वित्तिभाग्निविभवामाप्त्वाहम
 आवधकविभुत्त्ववभवत्त्वेक्षराम
 प्यउद्देवव्यामित्त्वविभुविभव ॥
 त्त्ववभवामेत्त्वविभवत्त्वेक्षरामी

ଅଶୋବବମିନ୍ଦିକର୍ଜୁରଥାକିମି
 ଏବାମେନରେବହୁକିମିଆମେନାମ
 ଆମ୍ବାମାର୍ପିକିମିକିମାମକିମିବ
 ଚମ୍ପେମୁବଳବନ୍ଦିଗିମିମେନ୍ତାମ
 ସିନମ୍ବନ୍ଦିକରେବରମିବିମାମାମ ୫
 ଏମାମେ । ୧୦୧

ମାମାମ ଥୁମେକୁଲୀକିମାମିମିମେ
 ମରମୃଦମାନକାମେହୁଏକବର ୬ ।
 ଦାବାଟକିଲେଭାନହୁବାହାମ ୭ ।
 କନମହୁନ୍ଦିବିନିମାତ୍ରାଟିକିମାହୁନ୍ଦନ
 ଏବପକିକିମାମରବାମିମକ ୮ ୯ ।
 ଚାକିମାମାମୁମୁମାନିତାହାମୈମିମି
 ବନ୍ଦିକେମୁମିମିମୁହୁମାତ୍ରାମ
 ଉତେମାହାମହୁଗହୁବାହୁମାତ୍ରାମ ୧୦ ।
 ଓରମୁମୁମାମୁମାମୁମାମୁମାମୁ
 ଆମିମାମୁମାମୁମାମୁମାମୁମାମୁ
 ଓତ୍ତାବନ୍ଦିତରମାମାମୁମାମୁମାମୁ
 ମିଥିମେତମାକାତାମାମୁମାମୁମାମୁ
 ମଧ୍ୟମାମେଣାକିମିମୁମୁମାମୁମାମୁ

ଶ୍ରୀକୃତିଷ୍ଠକପାତ୍ରଏଷାହୁ—

ଶ୍ରୀଗାୟତ୍ରୀମାତ୍ରାଦିତ୍ତନାମଶାରପ୍ରେରଣାଃ ପ୍ରତିତି—
 ଭାବରାତ୍ରିତ୍ତରମ୍ବା ଲାଭାଦେଶନାଃ ପ୍ରତିତି—
 କରେନ୍ଦ୍ରଆଚକବେଷେତ୍ରବନାଃ ପର୍ମିଜ୍ଞ—
 ଇଗାକୀନିବରଣବୈନପାନ ପୂର୍ଣ୍ଣକୃତି—
 ସାବେବକୁବୈନଶାନତ୍ତ୍ଵାଃ ଅପ୍ରତ୍ୟେହାଙ୍କଃ—
 ରିତ୍ତିତୁର୍ବୈଶାନତ୍ତ୍ଵାଃ ପ୍ରାଣିକୁତ୍ୱତ—
 ବାନ୍ଦ୍ରଧେନ୍ଦ୍ରାମିବପାନଃ ଭାବାବିନରାତ୍ରି—
 ଯାଏଯନକର୍ତ୍ତବ ପ୍ରତିତାନିକୁତ୍ୱତେ ଶାଚଚ୍ଛତ୍ର—
 ପ୍ରାଣଅତ୍ତର ପ୍ରତିତିବ୍ୟାବିଧାନିନିତ୍ତ—
 ସ୍ଵର ପ୍ରତିତାନାଦିରୀଆବିଧିନି ଇଗାକୀର୍ବ—
 ଯୋଦ୍ଧମାନିଦିଯାଆବିଧିନିଯଦ୍ୱୀଗରେ—
 ବାବି ପ୍ରାଣନାନେଆବିଧିନିନିତ୍ତକବୋଳି—
 କାଳମାନିଆବିଧିନପାବକରିତୁବେଳକ—
 ପିତ୍ତିବିଜ୍ଞାଯାରାଆବିଧିନିନିତ୍ତକିଛନ୍ତି—
 ଶାହାଜବଭାନ୍ଦିନିବକ୍ରତାନ ପ୍ରେମନାଦି—
 ଯାଭାନ୍ଦିନିବୈନକ୍ରମିବଳାନ ମିବା—
 ଯାଦ୍ଵିଦ୍ଵିଆବିଧିନିମୋରିତ୍ତିତ୍ତି—
 ଆରାନିନ୍ତୋନାମାଦୀବେଳକୁତୁମ୍ଭାରାକ ପିରିତ୍ତଥା—
 ମିଶିବାୟେବନିତ୍ତାନ ପ୍ରତିରୀବାଗିନି—
 ବୋଟିକୌଣସାନ ପ୍ରତିରୀବାଗିନି—

କୁଳକେନେନପିତ୍ରଃ ହେତୁଦୟଗାତ୍ରୀ
ଖାବିଲିତ୍ତିବ୍ରତଃ କୋଯାବ୍ରତମାତ୍ରିତେଷ୍ଠମା—
ଇନନିରୀକ୍ଷ୍ମନ୍ତଃ ବୁଦେତିଃ ପାତ୍ରକେତୁଷ୍ମେ—
ଆନଯାମାରଃ ଗମେକାତ୍ମ୍ବାହୁତେଷ୍ଠାବେ—
ଅଶ୍ରୁଆନମ୍ଭମାଦଃ ଗମକେତ୍ତୁବାହୁତେଷ୍ଠାବେ—
ପାତ୍ରାନମାରନାତ୍ମଃ ଏହିପାତ୍ରକୋବେବୁଦେ—
କୋରକେମୋହାରଃ ବ୍ରତିଯବ୍ରଚ୍ଛାଦିତ୍ତଃ—
ନିବାରଃ ଅନାଦିତ୍ତଃ ଇନକହେତୁତ୍ୟ—
ରଃ ଏହିପାତ୍ରକୁତ୍ୟାପି ଅଯରାନକେ—
ନରାକିଃ ଉତ୍ସର୍ଥମ୍ଭାବିଯାନିଶବ୍ଦି—
ଓରକାବିଃ ଗଞ୍ଜରେମାବିଆନିକେଣା—
ଆବକାତ୍ମଃ ଫନ୍ଦକାତ୍ମଃ ଏମେହବାରାଷ୍ଟେ—
ଶ୍ରୀକିତ୍ତଃ ଶ୍ରୀପରିଷିଷ୍ଠାତ୍ମବୀଃ ଶ୍ରୀବନଗାତ୍ମି—
ଇତିନାନ୍ତରମନ୍ଦିନୀମିଯକାତ୍ମର ପାତ୍ର—
ଦୂଷମଜୀବଃ ଅନ୍ତରବରକମାକିବେହିମାର୍ତ୍ତ—
ପାଦକରକରିବେଚେହଦୂରବାହୀନଃ—
ଶ୍ରୀମାଧୁଗାମାକିଦିକମେନ୍ଦ୍ରଶ୍ଵରନାମ—
ଇତ୍ତିପରତ୍ତାତ୍ମାତ୍ମିତାକମାନାମେ—
ଦାକନତ୍ରକାନରତ୍ତେ ତମେତାନାମକ—

আবত্তি ২ ও রাকাটে অভিযাহন— কর্তৃবন্ধনে—
ইকুকুক আনন্দ মহিমা : কর্তৃবন্ধনে চেনে
বিবীঠিবাব কিকিবি : প্রকাষ ভান্দাবরাপ্তি—
তাপ্ত চৰ্বিত্বাব : কর্তৃবন্ধনে ভৱনা তত্ত্বজ্ঞা—
আপ্ত রং অলমোদ্বৃত্তিশ্চ বন্ধনাপ্তিকদাস—
অঙ্গ পাপ বিচ্ছেদ কুরুক্ষিল নিরুত্তু বৃক্ষ স্মৃতি—
মেগা বিন্দু বহু তত্ত্ব নান্দন সীতিযাবাচ তত্ত্ব—
ন্দ্রান্ত রহস্য নান্দন প্রাপ্ত প্রাপ্ত নান্দনে বকথা—
তত্ত্ব নববিবৰণ : আবক্ষ বক্ষ কথা তত্ত্ব প্রয়োগ—
বেশ গ্রাম অপ্ত রহস্য নিশ্চিব : আচিন্ত্য তত্ত্ব—
বিজ্ঞান এক জ্ঞান : ইবুক অন্ত গুরাজ্ঞি—
আবক্ষ নান্দন বিবৰণ : বিজ্ঞান তত্ত্ব কামানি—
মহীনান্দন বিবৰণ : গম্ভীর ইত্যামুক্তি গ্রোত্তু—
ইত্যামুক্তি কানা মুক্তি প্রয়োগ নির্বিচিকি—
নিরাহত্ত্ব : বক্ষ অধিকার অবুজ্ঞান তত্ত্ব তত্ত্বে—
এ প্রদৰ্শন প্রতিকান্দে মুক্তি প্রয়োগ—
অপ্রয়োগ করত্বে ক্ষেত্র প্রাদীশ চাপ : আহা—
প্রত্ন প্রয়োগ নাপ রহস্য তত্ত্ব আপ : কর্তৃবন্ধনে—
গুরুচিকিৎসা মাত্র বীণ : কুকুর প্রাপ্তি—



দুঃখে দ্রোগ করে পার হত্তু বিটাডাৰ ॥
অবসরে কওক কুলে চূটি নওকাৰণ ॥
ইষ্টে গাঞ্জী বাঙ্গী কুবিলি অন্ধৰাৰণ ॥
ওমাবিনিষ্ঠৰ রংগাচু ॥ শিরৈ কুরাইল্য—
শুনৰিবয়াচু ॥ পুষ্প কুলে সুনৰে আসিবাছি—
হই মুন্দু ন ॥ চৌটি চৌটি মুক্তি হল্কে কোৱি—
শকাচুণ ॥ শামে নিৰ্বকাচু লসৰ গাছে শিলি—
আঘু ॥ শুনৰ আপাত গুৰুত্বৰ কোৱাৰণ ॥
বুলিশ দাগাৰ কেহু প্ৰভুৰ চৰিত ॥ ওৰোৱা—
শুনৰো মেঘাদুঃখে যাচু দেবৈ ॥ ইক্ষু রূপ—
শাবি নিষবকৰ বুবু ॥ অৱলোকন মাঝি ন আছি—
আৰ্দ্ধে লুনৰ মুৰে ॥ অস্থৰ কাৰ্য্যাৰ কুকুৰ আৰদা—
ৰং দেই যাত্রে দুর্বৃত্তি পৰীক্ষা পাবিলি নিদীৰণ ॥
মানো পৰিমাণ মাইল দিকি বিষ্পণ্য রণ ॥ উৰোৱা—
কুকুৰ কুন্ত হৃষি ন হাগন ॥ ন লিপি ভুড়ি—
হই নুনু দুড়ি অৰ আগু বৰায় ॥ মুৰায় বলি—
দোষ উচ্চৰ আনি রীয়ায় ॥ লেই খয় কুৱাবি—
দিপী দাবি যৰ ॥ জন্ম জো মেলি চন্দে আদুৰ—
দুপৰ ॥ বাধা দে আমাৰে বেই দুলে মেই রাই

एक० दोसरक० तीक० हि मेरात्मनः २
 मनविमेव यत्तिआकृष्ट॒ वृग्निरुचिः २
 स्त्रै भाग्येऽप्तु बाल॑ कृष्णकृष्णनः २
 इति अ॒ त्रयै च॒ द्वृग्ना भाष्ट॒ अवृक्षनः २
 नृशिंह॑ उथृ वृग्ना भाष्ट॒ अवृक्षनः २
 चृत्वा अ॒ धृष्टिं पृथृष्ट॑ कृष्णनः २
 आ॒ त्रै उ॒ ज्ञानृष्ट॑ द्वृग्ना भाष्ट॒ अवृक्षनः २
 वृग्नै त्रयै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 अ॒ श्वेत॑ भृग्नै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 आ॒ श्वेत॑ भृग्नै वृग्नै अ॒ श्वेत॑ भृग्नै २
 वृग्नै त्रयै बृग्नै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 वृग्नै त्रयै बृग्नै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 द्वृग्नै आ॒ श्वेत॑ भृग्नै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 त्रयै वृग्नै अ॒ श्वेत॑ भृग्नै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 कृष्ण॑ त्रयै वृग्नै अ॒ श्वेत॑ भृग्नै अ॒ श्वेत॑ कृष्णनः २
 अ॒ श्वेत॑ भृग्नै त्रयै वृग्नै अ॒ श्वेत॑ भृग्नै २

କେବଳ ପରିବାର ବନ୍ଦ କରନାର ୩୨
ଦାନି ହେଉଥିବା ମରାନ୍ତରର ୩୨
ଆର୍ଦ୍ର କରୁଥିଲା ଏବଂ କୁଳାଜାର ୩୨
ଅର୍ଥାତ୍ କାବିଆଶିକୁ ଏବନାମୁତର ୩୨
ଯୋକାତାରାଦୟାଗଣ୍ଡାନୀରାଦିମୁକ ୩୨
ଧିକ୍ ହେବାନ୍ତୁ କୁଳିବିକ ମେଧାଵୀର ନର ୩୨
କିନ୍ତୁ ଆବସାନିକ ମାତ୍ରାବୁଦ୍ଧ କାବିନର ୩୨
ବାଙ୍ଗେ ଜାଗାମାତ୍ର ଆମିକାରିନର ୩୨
ମୁଖିତାମ୍ଭୁ ରାଜ୍ୟରାଜାପାତ୍ରାନ୍ତିକରଣ ୩୨
ନିର୍ଭର୍ତ୍ତଃ ତାଜେତେ ନମ୍ବର ନରିଧିମନ୍ତ୍ରନର ୩୨
ରାଜିନେକମହାମାନଶକ୍ତାନିର୍ଭର୍ତ୍ତନ୍ତର ୩୨
ମରିଦେଇ ଇନ୍ଦ୍ର ଦ୍ୱାରା ସରମାନ କରିଲୁ ୩୨
ମୁଖିତାମ୍ଭୁ କମାଜେବାପରିନର ୩୨
ଦ୍ଵାରା ପରେ ଦୟନରୁ ମାନାମାନିତାମାନିତା ୩୨
ଆର୍ଦ୍ର କରିବାକାହିଁ କୁଳର ଜୀବନର ୩୨
ବାନ ଦୂଷକମାନର ଦୂଷିବିନ୍ଦ ୩୨

କମଳାମେତ୍ର ଆମାରଜୁଲ୍ଲିଙ୍ଗାମାର୍ଥେ ୧୦୨
 ହଣ୍ଡିଶ୍ଚି ପରିବଳ୍ଲିହିବ ମିଶ୍ରତ୍ୟେ ୧୦୩
 ଦେଖନ୍ତୁ ପ୍ରେବନ୍ଧିମେତ୍ର ମାର୍ତ୍ତିରୁହିବ ୧୦୪
 କାରିହିଏ ଓ ପରମାବିନ୍ଦ୍ରିଯମାରିବ ୧୦୫
 ମେଅରୁ ଭାବମିଲ୍ଲମେତ୍ର ହିବ ୧୦୬
 ଦେଖିଏ କାରିହିଏ ମାର୍ତ୍ତିରୁହିବ ୧୦୭
 ମିଶ୍ରକାମ୍ଲାହିନ୍ଦେତ୍ର ହିବ ୧୦୮
 ଅମାରେ ଏ ଅର୍ପନ ହଣ୍ଡିହିବ ମିଶ୍ରତ୍ୟେ ୧୦୯
 ଅର୍ପନ ହିନ୍ଦେତ୍ର ଆମାରେ ହିବ ୧୧୦
 ଆମାରେ ଏ ବଳ୍ଲିମିତ ନାହିଁ ହାନ୍ତିରୁହିବ ୧୧୧
 ଶାକିହିଏ କମେଲ୍ଲମେତ୍ର ହିବ ୧୧୨
 ଆମାରେ ମରିବ ଦ୍ଵାରା ହିବ ଆମାରଜୀବିତ ୧୧୩
 କାରିଜିତ ହିବ କମ୍ପିମିଶ୍ରଜନ ୧୧୪
 କଳାଇଣ କାରିବ କମୋହିନ୍ଦେନାହିଁ ହିବ ୧୧୫
 କମ୍ପିମିତ ହିବ କମୋହିନ୍ଦେନାହିଁ ହିବ ୧୧୬
 କଳାଇଣ ଉପରିମିତ ହିବ କମୋହିନ୍ଦେନାହିଁ ହିବ ୧୧୭
 ଆମାରେ ହିବ କମୋହିନ୍ଦେନାହିଁ ହିବ ୧୧୮
 କଳାଇଣ କାରିଜିତ ହିବ କମୋହିନ୍ଦେନାହିଁ ହିବ ୧୧୯

ପ୍ରୀମାଦିନାମଧେରେ ହୈଲେଖନ୍ତୁ କ୍ଷେତ୍ର ॥ ୧ ॥
ମେଳାଜିତି ର୍ବ ଯେମେହାତ୍ମୁ ତଥା ସିନ୍ଧ ॥ ୨ ॥
୩ ୯୨୦ ରେଣ୍ଡ ନାହାନ୍ତେ ହମାରନକି ର୍ବ ॥ ୩ ॥
ତେବେବାନ୍ତରେ କ୍ଷେତ୍ରକ୍ଷାନ୍ତିଶ୍ଵର୍ତ୍ତି ଭାଗ୍ୟ ବ ॥
ବହୁରେବ କାବିଦ୍ଵାଦିର୍ବଜ୍ଞ ପ୍ରେହନ୍ତ ॥ ୪ ॥
ଆମାର୍ବ ଦେଇଅକଣେ କିମ୍ବା ର୍ବ ନିର୍ବିନ୍ଦୁ ॥ ୫ ॥
ଶାକର୍ତ୍ତବ୍ୟାଦିବାକଣେ କିମ୍ବା ନିର୍ବିନ୍ଦୁ ॥ ୬ ॥
ଦୁଃଖର୍ବ ଦେଇବ ହୃଦୟର୍ବ ମର୍ମିଜା ॥ ୭ ॥
ଦୂରାବିଦ୍ଵିଷ୍ଟ ବଳ୍ପିତର୍ବ ଦେଇବ ରାତ୍ରିନେ ॥ ୮ ॥
ଶାଶ୍ଵତର୍ବ ଦେଇବ ବଳ୍ପିତର୍ବ ମର୍ମିତର୍ବ ॥ ୯ ॥
ଦେଇବର୍ବ ଦେଇବ ଆଦିଜାତର୍ବ ମର୍ମିତର୍ବ ॥ ୧୦ ॥
ଦେଇବର୍ବ ଦେଇବ ଶାଶ୍ଵତର୍ବ ମର୍ମିତର୍ବ ॥ ୧୧ ॥
ଦେଇବର୍ବ ଦେଇବ ଶାଶ୍ଵତର୍ବ ମର୍ମିତର୍ବ ॥ ୧୨ ॥
ଦେଇବର୍ବ ଦେଇବ ଶାଶ୍ଵତର୍ବ ମର୍ମିତର୍ବ ॥ ୧୩ ॥
ଦେଇବର୍ବ ଦେଇବ ଶାଶ୍ଵତର୍ବ ମର୍ମିତର୍ବ ॥ ୧୪ ॥

कामविक्रम्यतेनक अवैवश्याकाकः ॥
 कपमदिव्यहुत्येवभवाकभावादः ॥
 मनुकामित्याप्तिरुपलोभ्याभ्युठिरः ॥
 बल्लद्वजावर्त्सविष्टुवद्विवः ॥
 वरित्तनाजात्तागेष्ठुर्वृष्टेऽप्त्वः ॥
 विविभवत्त्वेकात्तिकृक अभावः ॥
 चक्रिदर्मिताकिमद्भृष्टिमेवज्ञनः ॥
 विद्यवीर्यकृतिवेकामविश्वित्वमनः ॥
 द्विमुच्छिक्षीक्षिमात्रात्ताप्त्वेष्ठुर्वेक ॥
 निमित्यत्त्वेष्ठुर्वत्त्वमाक्षन अप्त्वेक ॥
 त्वामुजेष्ठुर्वामात्रात्त्वमाक्षन एष्ठुर्वेक ॥
 गीत्येवथात्त्वमित्यक एत्येविश्वक
 अत्त्वेष्ठुर्वामीत्त्वमित्युत्त्वमाक्षन
 एवत्त्वमित्युत्त्वमित्युत्त्वमाक्षन ॥
 गमत्त्वमित्युत्त्वमित्युत्त्वमाक्षन ॥
 अत्त्वमित्युत्त्वमित्युत्त्वमाक्षन ॥

अनुवाप्तुरभाऊद्रुतिः इव रथैऽपि २५०
आत्मेष्टीक्ष्णीरघुरैभैरवैद्युतिः इव २६०
अवर्णिक्षिव भास्त्रैभैरवैद्युतिः २७०
ज्ञाप्तुरभाऊक्षिमवक्षिवैद्युतिः २८०
आवीक्षेप्त्रैभैरवैद्युतिः २९०
भैरवैद्युतिः वाजान्धक्षिवैद्युतिः ३००
क्षुरार्थक्षिवैद्युतिः वाजान्धक्षिवैद्युतिः
भैरवैद्युतिः ३१०
माक्षिवैद्युतिः वाजान्धक्षिवैद्युतिः ३२०
वाद्याद्यवाद्यवैद्युतिः ३३०
शमित्त्वाक्षिवैद्युतिः ३४०
माविभैरवैद्युतिः ३५०
मानिवैद्युतिः ३६०
वाद्यन्मात्रवैद्युतिः ३७०
स्त्रैर्मात्रवैद्युतिः ३८०
लेख्याद्यवैद्युतिः ३९०
माक्षिवैद्युतिः ४००
द्वैरेक्षिवैद्युतिः ४१०
स्त्रैर्मात्रवैद्युतिः ४२०

श्रीमात्मनज्ञानेश्वरकृपालैल्लज्जरामतः ।
 अवश्यकरवल्लिपिविविक्षकस्तुतः ३ ॥ २
 श्रीकृष्णप्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 आश्चर्यात्माप्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 रक्षकृष्णत्रिपुरादित्यस्त्रियस्तुतः ॥
 लोकस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 उमीन्द्रस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 गणेशस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 शूद्रस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 आदिकआदिग्रनथस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 शारामस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 अर्द्धस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 रमेश्वरस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 बाह्यिकास्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 अंडास्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 अवश्यकरस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 दिनकास्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥
 शृणुष्टावाऽभाविकस्त्रियस्त्रियस्तुतः ३ ४ ॥
 द्विनाश्वरस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्त्रियस्तुतः ॥

४२९ ४२९ अर्थात् नक्षत्रवर्तनः ।
आशु आवृत्तिराजाभ्यन्वितामवा-
प्रभवन्विग्रहाऽप्तव्युत्पत्तिः ॥
लीक्षण्डकाहिमक्षम्यद्देहं प्रोत्वः ॥
भृत्यमृष्टिर्विश्वेष्वन्तु कथा उत्त-
प्तेऽप्तवर्त्तिर्विग्रहाऽप्तव्युत्पत्तिः ॥
गात्रांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
वाक्यांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
उत्तरांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
सेव्यमात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
विश्वेष्वन्तु कथा ॥
वाक्यांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
क्षमेष्वन्तु कथा ॥
अवाक्यांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
क्षमेष्वन्तु कथा ॥
वाक्यांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
विश्वेष्वन्तु कथा ॥
सेव्यमात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥
अवाक्यांश्चित्तमध्यात्मा-क्षमेष्वन्तु कथा ॥

आ॒॒॒रदभ्यः ॥ कहि॒ज॒वर्जना॑कुर्वति॑ ॥
 ग्री॒ज॒क॒भ्यः ॥ भै॒रव॑भाक॒उः ॥ कौ॒
 ओग॑म्बात्ता॒दः ॥ अस॑व॒धनः ॥ कहि॒न
 ए॒क॑भः ॥ रुचि॑आत्ता॒क॒प॑ज्ञानः ॥ अ॒र्ज॒
 आ॒क॒षक॒भ्य॑क॒उ॒ज्ञिन॑ज॒विज॒नः ॥
 अ॒र्ज॒प॑र्वत॒क॒भ॒ज्ञान॑त्तो॒भः ॥
 अ॒र्ज॒ज्ञान॑विभास॑न॒रय॑नः ॥
 ॥ ब॒ग्नि॑भ॒स॑वो॒नेऽप॒क॒प॑ल्ल॒भ॒नः ॥
 इ॒र्ज॒म॑जा॒विभास॑र॒वा॒न॑क॒न॒हाक॑ ॥
 राज॑भ॒म॑भ॒ज्ञान॑भ॒न॒क॒न॒त्तो॒क॑ ॥
 प॒र्वत॒क॒न॒न॑न॒प॑भ॒अन॑र॒क॒न॒नः ॥
 अ॒न॒द्विन॑क॒न॒न॒ज॒र्ह॒र॒व॒म॑र॒भः ॥
 श॒त॒र॒न॑र॒न॒त्तो॒क॒त॒न॒द्व॒क॒द्व॒न॑ ॥
 अ॒र्ज॒क॒न॒न॒प॑श॒प॒त्र॒त्तो॒त्र॒न॒न॑ ॥
 उ॒न॒त॒र॒त्तो॒त्र॒न॒न॒क॒न॒न॒न॒न॑ ॥
 उ॒र्व॒भ॒भ॒न॑न॒न॒क॒न॒न॒न॑ ॥ क॒रि॒न॒न॑ ॥
 न॒न॒न॒न॒न॒न॒न॑ ॥ क॒रि॒न॒न॑ ॥
 क॒रि॒न॒न॒न॒न॒न॑ ॥ क॒रि॒न॒न॑ ॥

तावद्विजनः० वैरद्वैरुपेष्ठः० २
दावद्वैरुपेष्ठः० माहारुकस्त्रियः० २
भिक्षन्तु वाटियः० लोवकल्पउत्तमस्तु २
आभः० तावद्वैरुपेष्ठः० यक्षरथाभ्या० २
द्वः० द्वावद्वैरुपेष्ठः० द्वाव २
मिद्वैरुपेष्ठः० भावद्वैरुपेष्ठः० आर्द्ध २
पद्वैरुपेष्ठः० रक्मद्वैरुपेष्ठः० आर्द्ध २
द्विनिष्ठवर्षाति० द्विक्षिआकृशीभ्य २
द्वाव्याः० द्वावद्वैरुपेष्ठः० वृष्टिआव २
द्वैरुपेष्ठः० द्वावद्वैरुपेष्ठः० वृष्टिआव २
उद्गवनः० द्विवृष्टिसंभवः० उभि॒
स्तिवृष्टिआवः० द्विवृष्टिसंभवः० २
द्विवृष्टिआवः० काहवतिक्षिआव २
उग्निः० भावद्वैरुपेष्ठः० ज्ञाप्तिआव २
स्तिवृष्टिआवः० उभि॒
द्वैरुपेष्ठः० द्विवृष्टिसंभवः० २
द्विवृष्टिआवः० किंवाचनिष्ठव

सोऽपि आनन्दात् उद्दिक्षार्थवद्युभिः
अवैश्वरमविवाहार्थं आदिष्टिः ।
विसितकामप्रयोगान्वितकद्युमिवः ।
अत्रैष्वभावुभ्यर्थवैश्वार्थाभार्थरः ।
दिनकामेऽद्युमिविकालोक्युठवः ।
मित्येव अत्युभावैव कुरु च ॥ २ ॥
विसितकामप्रयोगेनात्तिष्ठग्निं तु ॥
विसितमाप्निष्ठिष्ठप्रभावितव्यतु ॥
द्विष्ठेवर्द्धुत्तद्युठेनवैव भासि ॥
परममाद्यनद्येव करिव आहुतिः ॥
ज्ञकैवल्याग्निवद्युवानवैमाक ॥
वेष्टकप्रसिद्धिवद्युविलाप्तु कर्मिक ॥
कामित्तकामित्तेनद्येव वैव ॥
प्रदीपित्तिविष्ठिष्ठत्तिविष्ठिष्ठ ॥
प्राप्नोत्तद्युवानवैव इति ॥ ३ ॥
विनेव कैवल्यमिकमृष्टिः ॥
कर्मिकमृष्टिः ॥

ଓକ୍ଟେମର ଲ୍ଲାଫର୍ମ ରତ୍ନ : ୨
ଅନ୍ତର୍ବିଗିର ଶିଆକହିଛୁ ଜୁଣିଶର୍ମ : ୨
ଶ୍ରୀପାତ୍ରାତ୍ମା ବ୍ରାହ୍ମପୁରିକବିବଦ୍ଧକ ନ : ୨
ବିଷ୍ଣୁଏ ମହାଦେବାମ୍ଭେ ଅନୁର୍ଭୁବ୍ରନ୍ଦ : ୨
ଶିଖିତୁ ଉଥୁରୁ ବରାହାମ୍ଭ ଅନୂଦନ୍ତ : ୨
ଚତୁର୍ବୀରାତି ପଦାଳୀକବିବଦ୍ଧ କନ୍ଦିନ୍ଦ : ୨
ଅନ୍ତର୍ବିଗିର ଶିଆକହିଛୁ ଆପକୁ ମେଧିର : ୨
ଶିଖିତୁ ମହାତ୍ମା ଅପିକବି ସିରିତୁ ଦ୍ଵାରକିର : ୨
ଅନ୍ତର୍ବିଗିର ଶିଆକହିଛୁ ମହାକବି ମହିନ୍ଦନ୍ତନ୍ଦିନ୍ଦ : ୨
ଅନ୍ତର୍ବିଗିର ଶିଆକହିଛୁ ବାରାଣୀର କରନମାନ : ୨
କରନେତେ କହୁନି ଶାକିବ ଉତ୍ସବ : ୨
ଶିଖିତୁ ଉଥୁରୁ ବରାହାମ୍ଭ ବିବଦ୍ଧକ ନେତ୍ରର : ୨
ଦ୍ଵାରମେ ଆନିମାନ ଅଭିଜାତାବିକିରିବ : ୨
ତାପରାମ ନୃତ୍ୟବକ୍ତ୍ଵକୁ ଦ୍ଵାରା ଲୋପନିବ : ୨
କାହିଁ କୁର୍ଦ୍ଦ ଏଣ୍ଟା ଶାକ ହୁଏ ତମାଙ୍ଗର : ୨
ଅନାନିମାନ କୁର୍ଦ୍ଦକ କହୁନାଯାଇବ : ୨

ବ୍ୟବପଦ୍ଧତିରେ କରନ୍ତିର ୦୨

କାହିଁ ୧୩୭ ମୁରତ କୃତିର କାମକାଳ ୦୨

ଆର୍ତ୍ତିକ ୧୨୫ ବାପୁ କୃତ ଆଗ୍ରାଜୀଠର ୦୨

ଆର୍ତ୍ତିକ ୧୨୫ ବାପୁ କୃତ ବିବଲ୍‌ପୁଅକ ୦୨

ଆକାଶପାତ୍ର ଆଖ୍ୟାନ କୃତ ବିଶ୍ୱାସ ୦୨

କୃତ ୧୨୭ ପ୍ରାଚୀନ କାମକାଳ ୦୨

କିଞ୍ଚିତବେଳ ମଧ୍ୟାମତିବିବା କୃତ କାମକାଳ ୦୨

ବାଲ୍ମୀକି ପାତ୍ର ଆମିକାରିନ କରିଛନ୍ତି ୦୨

ମିଥିମାନ୍ତ୍ରିବାର୍ଜିନ୍ଦ୍ରାଵରାଜ୍ଯାନିକିଷ୍ଟ ୦୨

ଲିଙ୍ଗନ୍ତିଃ ଆମ୍ବାନ ନାନ୍ଦୀ ମନ୍ଦିର ମଧ୍ୟାମତିବିଶ୍ୱାସ ୦୨

କାନ୍ତିନେକ ମଧ୍ୟମାନ କୃତ କାମକାଳ ୦୨

ମନ୍ଦିର ଏଣ୍ଡା କରିବାକାମକାଳ ୦୨

ଦ୍ରାଘିକେ ରଜର କୃତ ମଧ୍ୟମତିବିଶ୍ୱାସ ୦୨

ଶାନ୍ତିର କାମକାଳ ୦୨

ଆମ୍ବାନ କାମକାଳ ୦୨

ବାନ୍ଦାମକମାନ କୃତ କାମକାଳ ୦୨

कमलामेघोऽप्यारुद्धरुद्धिजक्षम् ३ ॥
 हनुमत्ति ग्रहो वसु इव चिन्तु ३ ॥
 देहमनुष्टो वनवसु अरु इव ३ ॥
 दावी इव ओव अव विश्व अविव ३ ॥
 अंगारु भूकमी द्वय इति इव ३ ॥
 उमीकृत ब्रह्मादिभूग्य इव चिन्ता इव ३ ॥
 एवं काम्पुष्टि इव इति इव ३ ॥
 अंगारु अव अव इव विविव ३ ॥
 अनुष्टो चौर्य अंगारु उक्ति विविव ३ ॥
 अव इव वसु इति लाग्य इव इव ३ ॥
 मारीच कैश्चिद्देह इति इव ३ ॥
 अंगारु भूमि वद्वान्ते अभाव धावी इव ३ ॥
 दावी इति इव इव क्रम इति इव ३ ॥
 कलाइ इव कर्म इव क्रम इव ३ ॥
 अनुष्टो इति इव इव कैश्चिद्देह इव ३ ॥
 कलाइ इति उक्ति इव इव क्रम इव ३ ॥
 अंगारु उक्ति इव इव क्रम इव ३ ॥
 इव कर्म दावी इति इव इव आग्ने ३ ॥

अमान्दिल जामेहर दै लेण डाक अ ३५ :
सिराजी र्व अंग अद्व उजावी व ३६
३३३० रन्जन क इमाज अवक ३७ व ३७
अमारन एक गज आमित्यु भर्तु व ३८
कहु रव ओ बिल्ली ३९ अ ३९ :
आरवि दै अक लोक ३१ व मिशन ३१
शक्ति गम्भी नाक लोक औ अन्न इ आ ३१
इयला र ३२ व र ज्यू र बमाकि आ ३१
दै गवि छु बल्ल ओ व ३३ व राह र ने ३४
गाठ एक ३४ व बल्ल गज व मस्तु व ३४
ऐ अट्टु ओ आदित्य उत्तर रुकः
दै लक्ष्म र भामिति अरु लोविस्तु व ३५
आल लक्ष्म अ ३६ ३७ इन दिवाकरः
दै गज अंग लोक लोगि ३८ व विस्तु रुकः
इर्थ अमानवि ३९ अ ३९ बिस्तु रुकः
बिस्तु दै अंग लोक अवक लोगि र भर्तु रुकः
अंग अक दै बिस्तु ग्राम ग्राम उत्तर व ३१
लिंग लिंग र वरी व अमर भर्तु भाकि र ३१

कार्यविज्ञात लेक अवैद्वत शाहकाकः ।
 कर्माद्विविद्ध कृत्ये रथमारुषालाभः ।
 मनुकामिति प्रियुर्लोक्याऽप्युठेः ।
 बल्लद्वयोर्पर्वतिष्ठ वर्णवः ।
 रवित्रिगांगाऽग्नेष्वद्वृक्षं दृष्टेऽप्येत्वः ।
 विवित्यावृद्धेक तिकृक अभावः ।
 चक्रिद्वयित्वा किं तद्विष्टमेवावृत्तः ।
 विवेद्यार्थकाद्विक शान्तिष्ठाओभवः ।
 द्वीपांशु गिरिजामात्राणां अस्त्रां इत्येक
 तिष्ठेऽप्यद्वयात्मामाक्षण अस्त्रक
 शास्त्राणेऽप्यामाक्षण एव्विद्वेष्ट
 शास्त्रेव विष्टमेविष्ट उपर्योगविष्ट
 अप्यद्वयामीनेद्विष्टमिष्टनामाक्षण
 शेषविष्ट शेषविष्ट विष्ट द्विष्ट
 गमतीमद्वयात्मामाक्षण विष्ट द्वय
 अप्यद्वयामीनेद्विष्टमिष्टनामाक्षण

आन्तरम्भुरामारूपे इष्वरान्तर्गत
आत्मेभवित्वीनि राजारूपैकृत्यहृष्टः
अर्वाचित्वं भास्करवृषभरुपान्तः
ज्ञाप्तुरकर्त्तव्यक्रियवरदिवस्तु एवः
आत्मिकद्वयविभृत्यामार्तित्वः
भृष्टप्रदवाजाहभक्तिश्चाभक्तिष्ठः
कद्वल्लभक्तिश्चाभिष्ठामामवः
अद्वयमात्माज्ञान्तर्गत्येव इव वः
भविवशमित्यमाद्येज्ञात्माद्यवः
वाद्याकृत्वावाद्येव इव वाद्याद्यत्वः
गमित्वाद्येव वद्येव भृष्टप्रदित्येव वः
माविष्ठेऽप्यरक्तेव वद्येज्ञात्माद्यवः
मित्विवद्येज्ञात्माद्यवद्येज्ञात्माद्यवः
वद्येज्ञात्माद्यवद्येज्ञात्माद्यवः
त्वाद्येव लोभमात्मेव वद्येज्ञात्माद्यवः
लोभ्याद्येव इव वद्येज्ञात्माद्यवः
भास्करेव कामवद्येज्ञात्माद्यवः
द्येज्ञात्माद्यवद्येज्ञात्माद्यवः
मित्विवद्येज्ञात्माद्यवद्येज्ञात्माद्यवः

श्रीमान्दिनीज्ञानपूरवदृष्टिष्ठानकामणि ॥
सर्वभवत्पूर्विभूविकरक्तेनिष्ठु ३ ॥
ज्ञानोपदेशविविष्टज्ञानहृष्टवज्ञानवेष्ट ॥
आग्नेयाओपक्षिवेकमनिष्टिलाववेष्ट ॥
दक्षहृष्टवेष्ट ३७ हान्दितज्ञुक्त्वेष्ट ॥
संज्ञान्दुष्टवेष्टवेष्ट देवनामहृष्ट ॥
उपनिषद्वेष्टवेष्टवेष्ट ज्ञानमानवेष्ट ॥
ज्ञानवेष्टवेष्टवेष्ट अप्युपामानवेष्ट ॥
ज्ञानवेष्टवेष्टवेष्ट उक्तेवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
अविक्षेपान्दिनवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
गावान्देहान्दिनवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
अर्द्धशृष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
दम्भृष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
दार्षिज्ञानवेष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
स्मृतिआवेष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
सर्वभवत्पूर्विभूविकरक्तेनिष्ठु ३ ॥
द्विनकाल्पत्रहृष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥
६७ गुणवाऽमादिकमर्त्त्वाभद्रुष्ट ३ ४ ॥
देवेष्टहृष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्टवेष्ट ॥

४२५ ४२६ अर्थात् नक्षत्रमवस्थाः ॥
आप्तु आनुविद्युताज्ञविभावस्था
सोभ्येत्विभवाज्ञात्वेत्वेत्वेत्वः ॥
लीक्ष्यकाहिमक्षेत्रहेत्वेत्वेत्वः ॥
मृदमेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
प्राप्तावेकाज्ञिदेवत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
आप्तु लीक्ष्यक्षेत्रेत्वेत्वेत्वः ॥
इत्यग्निरक्षेत्रेत्वेत्वेत्वः ॥
४२७ ४२८ उत्तीर्ण्यग्निरक्षेत्रेत्वः ॥
जयेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
द्वितीयास्त्रावस्थाल्यत्वेत्वेत्वः ॥
४२९ ४३० गण्डावस्थाल्यत्वेत्वेत्वः ॥
श्वसावस्थाल्यत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
अप्यात्मावस्थाल्यत्वेत्वेत्वः ॥
द्वितीयाप्यात्मावस्थाल्यत्वेत्वः ॥
४३१ ४३२ अनन्तेऽप्यात्मावस्थाल्यत्वेत्वः ॥
लीक्ष्यक्षेत्रेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
प्रेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
गण्डावस्थाल्यत्वेत्वेत्वेत्वः ॥
अनन्तेऽप्यात्मावस्थाल्यत्वेत्वः ॥

आठेतदभ्यः ॥ कर्मिज्ञवमस्तुतानि ॥
 विद्युज्ञकभ्यः ॥ श्रेष्ठं ताकाग्यः ॥ कर्मि
 ओपस्त्रायादः ॥ त्वयाववत्वः ॥ कर्मि ॥
 एकव्यः ॥ कर्मिअत्याकर्मिआव्यः ॥ अन्तर्भूमि
 आवृक्षकमीकर्मिन्दृष्टिविज्ञवः ॥
 अहम्हृदयकमाज्जन्मिभवनः ॥
 अद्वितीयविभासद्यावेष्वावः ॥
 ॥ बाह्याभावोन्नतावर्त्तन्त्रिव्यवः ॥
 द्वितीयावविभासवेष्वाव्यवाहकः ॥
 राम्भासद्यावर्त्तन्त्रिव्यवकर्त्तव्यवाहकः ॥
 पर्वतकर्त्तव्यवाहकः ॥ गद्यमवाहकव्यवः ॥
 अवृद्धिवक्ते गठन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 गोत्रव्यवहान्तावर्त्तन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 अर्थकालव्यवहान्तावर्त्तन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 उन्नत्रिव्यवहान्तावर्त्तन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 उवद्विवाहावर्त्तन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 उवकारन्त्रिव्यवहान्तावर्त्तन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 कन्त्रिव्यवहान्तावर्त्तन्त्रिव्यवाहकव्यवः ॥
 एवं एवं

तावज्ञानिः० वैदेह्योदयात्मः० २
भास्त्रिग्निभागः० आहारक्षिणीः० २
प्रिकावृत्तिः० लेपकर्त्तव्यमन्तः० २
आग्नेयः० तावज्ञाप्रयत्नः० प्रकृतेगामा० २
प्रदः० द्विष्टिनिर्विवासः० तथाम् २
स्त्रियोः० भावितिभवः० आर्द्ध० २
ग्रन्थकर्त्तव्यः० तकमवाहितिः० २
द्विज्ञवर्गिति० देवकिआद्येष्व २
ठाप्ताः० आर्द्धकमन्तः० वृष्टिआव० २
हुग्नः० तावनन्तिरभवत्वः० गति० २
उपायमः० द्विष्टिनिर्विवासः० अग्नि० २
स्त्रियकाहिताव०० तुकवशीजैष्ट०३२
हित्वमद्भासित०० कार्यवक्तिआ० २
प्राप्तिः० भावमवृत्त०० जाग्रत० २
स्त्रिय०० अग्नितिनेवमित्तिः०० २
त्वं वृत्त०० वृत्त०० वृत्त०० वृत्त०० २
स्त्रियविश्वासिः०० किंवाचनिधन०

ଶ୍ରୀପତମାଆଜୀବ କାରକର୍ମେ ଆଶ୍ଵାଦ
 ଲେଖୁଥିଲା ଆ ଜୀବକ ହେତୁ ଜ୍ଞାନେ ଆଶ୍ଵାଦ
 ଆଶ୍ଵାଦ ଆଶ୍ଵାଦ ଆଶ୍ଵାମାନିଜାନ୍ମାନ
 ଆଶ୍ଵାଦିଣର ଗ୍ରାହକରିତେ ଆଶ୍ଵାଦ
 ଆଶ୍ଵାଦ ବେଳେ ଆ ଜୀବରେ ଆଶ୍ଵାଦ ବେଳେ
 ଭବ ଆଶ୍ଵାଦ ବେଳେ ଆଶ୍ଵାଦ ଆଶ୍ଵାଦ ବେଳେ
 ଏମକରିତେ ଆଶ୍ଵାଦ ଏମକରିତେ
 କେବଳିବା ଅନ୍ତଜୀବ କୈମକାଣ୍ଡିକ୍ଷା
 ଶାନ୍ତିଭାବକ ଆ ଜୀବାମରହିଲା ଆଶ୍ଵାଦ
 ଆ ଜୀବାମରହିଲା ଆବରକ ଆଶ୍ଵାଦିକ ଆଶ୍ଵାଦ
 କ୍ରାନ୍ତିତ ଗମକ ପ୍ରାଣୀ ଦ୍ୱାରକାକିବାରାଗ
 ଆବରକ ଆବରକ ଆଶ୍ଵାଦିକ ଆଶ୍ଵାଦ
 ଅନ୍ତିଭାବକ ଆଶ୍ଵାଦିକ ଆଶ୍ଵାଦ
 ମୂର୍ଖିତ କାଳେ ମାଧ୍ୟମରେ ଆଶ୍ଵାଦ
 ଅନ୍ତରୁଅନ୍ତରୁଭାବରୀତିରେ ଆଶ୍ଵାଦ
 କରନ୍ତର କରିତେ ପାରିବ ଅନ୍ତରୁଭାବ
 ତରଫରୁଥିଲେ କାମିତେ କାବିର ଠବନ
 ହାହାର ଅକ୍ଷରରେ ହେଲା ପାରିବି ଆଶ୍ଵାଦ

୪୨ ଥାତିରମାନିକ୍ଷେତ୍ରଭାବ-ଆଶୀର୍ବାଦ

୩୧୦ ଆଶୀର୍ବାଦମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥ

ଶ୍ରୀଯତ୍ତା/ଶ୍ରୀଆଶୀର୍ବାଦମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥ

ଏହୀ ଥାତିରମାନିକ୍ଷେତ୍ରଭାବାନ୍ତି

ଶ୍ରୀକୃତ୍ସନ୍ଧାନମାକିଣିହୃଦୟର୍ଥାଣେ

ଦେଖିଲାମୁଁ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଅଶ୍ଵାଶିଦ୍ଧରବାନମାତ୍ରା
ଅଶ୍ଵାଶିଦ୍ଧରବାନମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
ଭାବନେ ପାଇବାର୍ଥୀ ରହିବାରି ମହିତୀଚାର୍ଯ୍ୟମାତ୍ରା
ତଥାଶିଦ୍ଧରବାନମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
ଓବେ ଆଶୀର୍ବାଦମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
ମୋହବୁଜ୍ଞମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
ଇମନାକିମାନମଧ୍ୟବିନବିମଦ୍ରିବନାହୁତାର୍ଥ
ଚାଲିଲେବନ୍ଦାନାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
ମତ୍ତୁପାଦମଧ୍ୟମନ୍ଦିରମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥ
ଶାକମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
ଗାଁମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି
କାଳିମାତ୍ରାହୁତାର୍ଥଭାବାନ୍ତି

ଆକିମି ଏ ତାବିଶୀଳେତୁ ଭାବୁଆଛିନ୍ତି
 ଆବର୍ଜ୍ଞା ମହାବିଦ୍ୟାନ୍ତେ ପ୍ରାପ୍ତ
 ଆବର୍ଜ୍ଞା ମହାବିଦ୍ୟାନ୍ତେ ପ୍ରାପ୍ତ
 ୦ ୦ ୦ ୦ ୦ ୦ କାଣ୍ଡିର୍ଜିଲ୍ଲାଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ
 ଲୋକ କବିବକନ୍ତୁ ଜ୍ଞାନ ମୋହମ୍ମିନ୍ଦୁ
 ଯାତ୍ରା କାହିଁ ବାମାଦୀରାବଦ ବାବତ୍ୟା କିମ୍ବା
 ବରମତ ଆତ୍ମେ ଆମାର କାହିଁ ମାତ୍ରାତ୍ମକ
 ଆଜକ ହିତୀମାନ ଆବକ ଥାଏ ମଧ୍ୟାବିନ୍ଦୁ
 ମତ ଲୀଏ ଓ ମୁହୂର୍ତ୍ତବିଦ୍ୟାକାଳୀନ୍ତିର୍ବିନ୍ଦୁ
 ଦେଖ ଉତ୍ସମାନ ଅବଦ୍ୟାନ୍ତୁ ଶାନ୍ତି ହାବମାତ୍ରାତ୍ମକ
 ଆତ୍ମା ଆବକ କାହିଁ କାହାତୁ ଆତ୍ମା ଆତ୍ମା
 କିମ୍ବା ହାତ୍ୟକ କାକାନ୍ତି ଜେ ଆବର୍ଜ୍ଞା ଆବର୍ଜ୍ଞା
 ଆବର୍ଜ୍ଞା ଆବର୍ଜ୍ଞା ଆବର୍ଜ୍ଞା ଆବର୍ଜ୍ଞା
 ଆବର୍ଜ୍ଞା ମାତ୍ରା ମଧ୍ୟାବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ
 ମଧ୍ୟାବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ
 ମଧ୍ୟାବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ
 ମଧ୍ୟାବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ
 ମଧ୍ୟାବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ ରଙ୍ଗୁମ୍ବିନ୍ଦୁ

ସଂଦ୍ରମାତ୍ରମାତ୍ର ଆଖାତୀ ଦୀର୍ଘ ଆଳାର :—

କାନ୍ଦିଲୋମଣ୍ଡିଲୀ ଦୂରକ ଅନ୍ତୁଆଗମନାର :

ଅନ୍ତୁଆଗମନାର ପରମାନନ୍ଦକ କରିଲା :—

ଆଖାର ପରମାନନ୍ଦକ ଅନ୍ତରକ ଦୂରିଲା :—

ଫିଲିଙ୍ଗାର୍ଥକ ଲେ ଦୀର୍ଘତକ ବିରକିଜାଇଲା

ଦୂରକ ମନ୍ଦିରାଶାତ ଦେଖିଲିଙ୍ଗାର୍ଥକିଜାଇଲା

ତ ମାତ୍ର କୃଷ୍ଣା ଜାନୁବ ଜୀନା ଏକର୍ଥର :—

ମୁଖୀଙ୍କା ଏଠାନ୍ତିଜୀନା ଆଖାର ଜ୍ୟାତର :—

ଦୂର ଏ ଆଧିକାରୀତି ଏହି ହମାରୀର :—

ଆଖାର ଏ ଶ୍ରୀ ଅମାବାସ୍ୟ କାରିତତଜ୍ଞହାର :—

ଆଖାର ଏ ଦ୍ଵିଜାର୍ଥ ଆମେଲିଲେ ରମନାମାଦିମା

କହିଲେ ବର୍ଷା ଏ ଅନ୍ତୁଆଗମର୍ତ୍ତବମାତ୍ର :—

ଆଶର ତରତ୍ୟ ମୋର ମହାକୋଣ୍ଠୀ କାମ :—

ଅ ହମ୍ରୀରକୁ ରତ୍ନିର୍ମଳିର୍ବିଲ୍ଲିକ ଅନବିତୀମ :—

ଆମ୍ବାଯୁଗାମ୍ବିଲ ମଧ୍ୟାତ୍ରକାମାଦିକାଳୀନିଲ୍ଲ

ଏହିରମାତ୍ରମାତ୍ର କବିମାରା କାମାଃ :—

କାମିନ ଆଚିନ୍ତନ ଏହି ମାକିମାତ୍ରିଲା :—

ଶାଶ୍ର କ ଭାଗକୁ ଅନ୍ତରିକ୍ଷରେ :

ଶାଶ୍ରରେ ଅର୍ଥର ହୃଦୟରେ :

ମୋହନ ପରିକରେ ଓ ମନୀକର ବିଶଳକ୍ଷୟରେ :

କେ ଆମରେ ଓ ନନ୍ଦେ ବନ୍ଦିଲେ ଦେଖ ଡାକ୍କରେ :

ଅର୍ଥର ଆ ଏ ଓ ମନୀକର ସଜିଆନ୍ତିକରେ :

ଇକାଠେ ଦ୍ଵିବାବେ ଓ ମନୀକର ବିଶଳକ୍ଷୟରେ :

ଜାହାନ ଆମ୍ରଦେଶରେ କୈ ଧରିମାନ୍ତିକରାବେ :

ମୋହନ ମାନ୍ଦିଶାଶ୍ର କ ଭାକର ବିଶଳକ୍ଷୟରେ :

ମୋହନ ଏ ଅନ୍ତରିକ୍ଷର ବିଶଳକ୍ଷୟ ସିଦ୍ଧି ଆବଶ୍ୟକ :

ଶାଶ୍ରରେ ବିକରେ ନନ୍ଦା ପାକର ମାନ୍ଦିଆବଶ୍ୟକ :

ଅନ୍ତରିକ୍ଷର ଜାବ ଆହିକି ହୃଦୟ ମୋହନ ରେ :

ନନ୍ଦା ଆବକରି ରେ ନାନ୍ଦିଶାନ୍ତିକରାବେ :

ଶ୍ରୀମତୀ ଶ୍ରୀମତୀ ଶ୍ରୀମତୀ ଶ୍ରୀମତୀ :

ଆମ୍ରଦେଶର ଭାବରେ କିଛି ଶାଶ୍ରରେ :

କେ ଆବେ ତୁ ମିଆନ୍ତରେ କେ ନାମହାରଣ ଏ :

ଅନ୍ତରିକ୍ଷର ହନ୍ତେ ଏ ଭାଗ ଏ ଆବନ୍ତିକର୍ତ୍ତରେ :

ଶ୍ରୀମତୀ ବାବେ ଓ ଅନ୍ତରିକ୍ଷର ଉତ୍ସମ ଦୂରାଧିବର :

ଦୂରାଧିତୁ ଆନ୍ତିକ ବାନ୍ଧିମାନଙ୍କ ସର୍ବରୁରା :

ଆବାବିତେ ଜ୍ଞାନ୍ତୁଥାମ୍ବଦ୍ଧଃ; ଯତ୍ପରାଅଙ୍ଗ
ଦୟାଆମେ :: ଯକିଆ ଅଞ୍ଚାବିତାମ୍ବଦ୍ଧଃ;
ଆଶ୍ରୁ କରେ ଅଗ୍ରାବିଷ୍ଟାମ୍ବଦ୍ଧଃ; ଏକ ଜ୍ଞାନ
ଶତାନ୍ତ ଆମ୍ବଦ୍ଧଃ; ନିଷ୍ଠା ହିନ୍ଦିନାମରତଦ୍ଧଃ ।
ଯତ୍ପରା ଅବାମିଆବ ପ୍ରତିମଃ; ସାମ୍ବିତିଜା
ଫଳମିତିବି :: ଯବେ ବିବନ୍ଦ୍ରକବି :: ।
ଆଶ୍ରୁତ୍ତକ ବାମ୍ବଣାବ ହବୁ :: ଆବାବି
ଆମେ ଆମେ :: ବାବୁ ଦ୍ଵାରା ବରଲୋକେ ::
ବୁଦ୍ଧିରେ କରି ଦ୍ଵାରା ଆଶ୍ରୁ କରିମଃ ::
ଯତ୍ପରା ମର୍ମଃ; କରିବେ କାଶ୍ରୁ କରିମଃ ::
ଯତ୍ପରା ଆମ୍ବଦ୍ଧମର୍ମଃ; ଆମ୍ବଦ୍ଧାଶ୍ରୁ
କେ ଜୀବିକେ :: ବାମ୍ବାମରାମିବାବେ ::
ମହାନିଃସରବ ଦେଇ ଦ୍ଵାରା ନମଃ; ତାହିତିମ
କିତାବମାନ୍ଦଃ; ଆଶ୍ରୁ ଆଶ୍ରୁ ମର୍ମିକାନ୍ଦଃ
କାହିବାମକ ନିର୍ମିତ ବହବୁ :: ଆମିତିଜା
ଫଳମିତିବି :: ମରିବ ନିଷ୍ଠାମାତିକ ନିବି ::
କାମମର୍ମତିବିମର୍ମଃ; ଆବଃ; ।
ମାନ୍ଦିନମର୍ମବୁଦ୍ଧିଃ; ବନ୍ଦମିମାନ୍ଦିନମର୍ମବୁଦ୍ଧିଃ



ଆମର ଲୁଗମର୍ମା ଆକାଶା ୨୩ ୧୨
ପାଇଁ ଜୀବିତ ଅବହିନୀ ଆହୁ ଇମ୍ବେ ୧୨
ମରନ ଆହୁ ଏହାକିମୁଖ ମରନ

ଯଦୁ ଓ ଆମଦିବ ଆହୁ କୁର୍ତ୍ତି ନାହିଁ ଏ ୧୨
ଗୋଟିଏ ମରନ ଆହୁ ତାର ଲୁଗମର୍ମା ଆହୁ
ଆମର ଆହୁ କିମ୍ବା ଆହୁ ତାର ମରନ ଆହୁ
ମରନ ଆହୁ କିମ୍ବା ଆହୁ ତାର ଆହୁ
ଗୋଟିଏ ମରନ ଆହୁ କିମ୍ବା ଆହୁ ତାର ଆହୁ
ଦୋହାର ମରନ ଆହୁ କିମ୍ବା ମରନ
ଏଥିମରନ କିମ୍ବା ଏହାକିମ୍ବା କିମ୍ବା
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା
ଆମର ଲୁଗମର୍ମା ଆହୁ କିମ୍ବା ଆହୁ
ଆମର ଲୁଗମର୍ମା ଆହୁ

କିମ୍ବା

ପ୍ରତିତିଏ ଜୀବନ ଜୟମହାରାତ୍ରି କଥା ;
ଲୋକମାନଙ୍କ ଶୁଣିବମାନ୍ୟାତ୍ମକ କଥା ;
ସୁରେ ସୁରେ ଦୁଃଖକ ହିବିମାନା କଥା ;
ଆହୁରେ ଆଜ୍ଞା ପୂଜ୍ୟ କରିବିଲୁହା କଥା ;
କର୍ମରୁତ୍ସମତ୍ତୁ କିମ୍ବା କଥା ଆମାର ;
କର୍ମଲକମତ୍ତୁ କରିବାକାରୁ କଥା ଗୁରୁତ୍ୱ ;
ଶ୍ରୀ ମହାବାବ ; ଶ୍ରୀ ମହାକଳୀଙ୍କ ;
ଶ୍ରୀ ମହାବାବ ଆଜ୍ଞା ପୂଜ୍ୟ କଥା ଆମାର ;
ଆମେ କବ କହୁ ନ ଆଜ୍ଞା ଏକ କବ କହୁଏ କଥା ;
ଶ୍ରୀ ଏ ପୂଜ୍ୟ ମହାବାବ କହିବିଲୁହା କଥା ଏ ;
ଶ୍ରୀ ମହାବାବ ଆମାର ଜ୍ଞାନତ୍ୱ ହିଲେ କଥା ;
ବିଷ୍ଣୁ କବି ଦେଇସର୍କ ଆମାର କଥା ;
ଆମର ଭାବିଲେ କର୍ତ୍ତ୍ୱ ହିଲୁକଥା ;
ଆମର ଜ୍ଞାନକ ବିଷ୍ଣୁ କଥା ;
ଅନ୍ତର୍ଗତି ଆମେ ଦେଇବକବି କଥା ;
ଆହୁ କାହିଁ କାହିଁ କରେ ଆମକ ଗୁରୁକାମା ;
ଆହୁ କବ କହୁ କି କହାର କବ ଆମିଲୋଗା ?

ଶ୍ରୀ ଅଧିକାରୀ

অশ্বিনী

১

শ্রী পদম আ না ব কৃষ্ণক স্মৃতি আ গীত ।
 অ রূ দুর আ না আ ব র ত্ব র জো গীত মা নু ।
 আ গীত আ নে আ প্রের আ গীত মা গীত জো গীত
 আ গীত ন ব গীত র জো গীত বি র আ কৃত ॥
 জো গীত বে ক ও আ না নু গীত গীত বে ন ॥
 শব শ্রুত বে আ গীত আ গীত বে বি র মণ ॥
 শ্রুত মক বি র শ্রুত মক শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 কে ক বি র অ ন্ত আ ব কৃত মক শ্রুত শ্রুত ॥
 শ্রদ্ধ আ ক আ কৃত মক র অ ব না ॥
 আ কৃত বি র আ ব র ক শ্রুত ক অ ব না ॥
 শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত বি র বা ম ॥
 আ ব র ব র শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 অ শ্রুত অ শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 শ্রুত শ্রুত ক শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 অ ব র অ ব র শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 ক র শ্রুত ক শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 ত ব শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥
 শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত ॥

পুস্তক